1. सूरदास

- जन्म: 1478 ई. दिल्ली ने निकट 'सीही' (फरीदाबाद) में हुआ था।
- 1509 ई. में गऊघाट नामक स्थान पर **वल्लभाचार्य** ने सूरदास को दीक्षित किया।
- 1519 ई. में **गोवर्धन में श्रीनाथ** जी के **मंदिर-निर्माण** के पश्चात् सूरदास को कीर्तन का दायित्व सौंपा गया था।
- 1565 ई. विट्ठलनाथ के '**अष्टछाप**' की स्थापना की।
- 1581 ई. के लगभग पारसौली गाँव में सूरदास जी का देहावसान हो गया तब इनकी मृत्यु पर **विट्ठलनाथ** ने कहा था-"पुष्टि मारग का जहाज जात है सो जाको कछु लेना हो सो लेऊ।"
- सूरदास ने प्रारम्भ में दास्य-भक्ति फिर वल्लभाचार्य की प्रेरणा से 'सख्य भाव' की भक्ति करना प्रारंभ किया था, जो कालान्तर में माधुर्य या प्रेमाभक्ति में तब्दील हो गया।
- वल्लभाचार्य द्वारा सूरदास को कथित पंक्ति है (जिससे वह सख्यभाव की भक्ति करने लगे)—"**सूर ह्वै कै ऐसो काहे को घिघियात है, कछु हरि भजऊ कर तेहि।**"
- **सूरदास की प्रमुख रचनाएँ हैं**—1. सूरसागर 2. सूरसारावली 3. साहित्य लहरी।
- सूरसागर **बारह स्कन्धों** में विभाजित है जिसके **दशम स्कन्ध** में 'भ्रमरगीत सार' है।

Scanned with CamSc

- सूरसागर में लगभग 750 पद भ्रमरगीत से संबंधित हैं।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा संपादित **भ्रमरगीत सार में 400 पद** हैं।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'भ्रमरगीत' को 'सर्वश्रेष्ठ' '**ध्वनि काव्य**' एवं सर्वश्रेष्ठ '**उपालम्भ काव्य**' की संज्ञा दी है।
- भ्रमरगीत में कवि ने प्रेमाभक्ति को स्थापित किया है—

  ''भ्रमरगीत जो सुनै सुनावै।

  प्रेमाभक्ति सो प्रानी पावै।''
- भ्रमरगीत के माध्यम से ज्ञान पर भक्ति, योग पर प्रेम, चतुरता पर सरलता, मस्तिष्क पर हृदय, शहरी संस्कृति के अभिजात्य पर ग्रामीण जीवन की नैसर्गिकता की विजय दिखलायी गई है।
- 'भ्रमरगीत' मानव हृदय का व्यापक चित्र फलक है। विप्रलम्भ शृंगार की चारों स्थितियाँ-पूर्वानुराग, मान, प्रवास तथा करुण की मार्मिक अभिव्यक्ति भ्रमरगीत में हुई है।
- भ्रमरगीत में वियोग शृंगार की दस अवस्थाओं का जीवंत मर्मस्पर्शी चित्रण मिलता है। कवि ने गोपियों की एकनिष्ठ प्रेमभावना को रूपायित किया है।
- **'हारिल की लकरी'** कृष्ण के प्रति सघन व एकनिष्ठ भाव को व्यंजित करता है।
- गोपियाँ कृष्ण के प्रेम को दोनों लोक (इहलोक व परलोक) से मुक्ति का आधार मानती हैं।
- **डॉ. रामकुमार वर्मा**—''सूरदास पद संगीत के जीते-जागते अवतार से हो गये है।''
- **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**—''सूर की रचना इतनी प्रगल्भ और काव्यांगपूर्ण है कि आगे होने वाले कवियों की उक्तियाँ सूर की झूठी मालूम पड़ती हैं।''
  ''सूर वात्सल्य हैं और वात्सल्य सूर हैं।''
- **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** ने तुलसीदास को साधनावस्था का कवि तथा सूरदास को आनन्द की सिद्धावस्था का कवि एवं लोकरंजनकारी कहा है।
- आचार्य शुक्ल ने सूर को ''भावाधि पति'' कहते हुए सूर की नवीन प्रसंगोद्भावना शक्ति की प्रशंसा की है।
- **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**—''वात्सल्य और शृंगार का रस राजत्व यदि किसी ने दिखलाया है तो सूर ने उस क्षेत्र में महाकवि ने मानो किसी और के लिए करने को कुछ छोड़ा ही नहीं। ये वात्सल्य एवं शृंगार का कोना-कोना झांक आये हैं।''
- हिन्दी में भ्रमरगीत-परम्परा का तात्पर्य उन ग्रन्थों से लिया जाता है जिनमें उद्धव गोपी संवाद की योजना की गई है। 'भ्रमर' अपनी रस लोलुपता के कारण 'व्यभिचारी' व्यक्ति का प्रतीक बन गया है।

Scanned with CamSc

- भ्रमरगीत-परम्परा में भी 'भ्रमर' को प्रतीक रूप में प्रयुक्त करते हुए 'कृष्ण' एवं 'उद्धव' के लिए उसका प्रयोग किया गया है।
- **भ्रमरगीत की विशेषताएँ—**
  1. निर्गुण के ऊपर सगुण की विजय
  2. निर्गुण उपासना का खंडन, योग-साधना का खंडन,
  3. उपालम्भ की प्रवृत्ति,
  4. व्यंग्योक्तियों की प्रधानता,
  5. कृष्ण के प्रति **एकनिष्ठ** प्रेम,
  6. उद्धव के उपहास एवं उनके पराजय का चित्रण,
  7. गोपियों की विरह वेदना।
- **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**—"निःसन्देह सूर का भ्रमरगीत नाना विशेषताओं से युक्त भावमय, गहन, विस्तृत और व्यापक है।
- भ्रमर रूपी पुरुष की रसलोलुप प्रवृत्ति का उपालम्भ साहित्य में कालिदास में सर्वप्रथम मिलता है किन्तु हिन्दी में भ्रमरगीत-परम्परा का व्यवस्थित रूप कृष्णभक्ति संबंधी ग्रन्थों में मिलता है।
- भ्रमरगीत का उपजीव्य ग्रन्थ श्रीमद्भागवत है।
- सूर के भ्रमरगीत-**प्रसंग को चार भागों में विभक्त किया** गया है—
  1. श्रीकृष्ण द्वारा अपने सखा उद्धव को बुलाकर ब्रज में ज्ञान की सरिता प्रवाहित करने का आग्रह।
  2. उद्धव का ब्रज में जाना और गोपियों को कृष्ण के द्वारा भेजा जाना और ज्ञान-योग का उपदेश देना।
  3. वहीं उड़ते हुए एक भ्रमर के माध्यम से गोपियों का श्रीकृष्ण और उद्धव दोनों को खरी-खोटी सुनाना, उपालम्भ देना और उद्धव के उपदेश का उपहास करना।
  4. गोपियों के प्रेम की अनन्यता एवं एकनिष्ठता से अभिभूत उद्धव का मथुरा लौट कर कृष्ण के समक्ष अपनी पराजय स्वीकार करते हुए उन्हें गोपियों की विरह-दशा से अवगत कराना।

भ्रमरगीत सार का विश्लेषण—पाँच भागों में

1. वे उक्तियाँ जिनमें गोपियाँ ज्ञान और भोग की कठिनता का वर्णन करती हैं।
2. वे उक्तियाँ जिनमें गोपियाँ उद्धव को अनेक प्रकार से कोसती हैं, उसे खरी-खोटी सुनाती हैं और उपालम्भ देती हैं।
3. वे उक्तियाँ जिनमें गोपियाँ श्री कृष्ण को छली-कपटी कहती हैं, उनकी प्रीति को अस्थिर एवं स्वार्थपूर्ण बताती हैं, **उनपर** व्यंग्य प्रहार करती हैं।

Scanned with CamSc

4. वे उक्तियाँ जिनमें गोपियाँ सच्ची प्रीति का निरूपण करती हैं।
5. वे उक्तियाँ जिनमें गोपियाँ कृष्ण वियोग जन्य अपने दुःख का निरूपण करती हैं और उद्धव को कृष्ण के लिए अपना संदेश देती हैं।

- **भ्रमरगीत का मूल आधार**-श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध का 46-47वाँ अध्याय (श्लोक संख्या 12 से 21) है।
- **भ्रमरगीत का अर्थ**-भ्रमर को लक्ष्य कर के लिखित रचना। उद्धव-गोपी संवाद के मध्य कहीं से कोई भ्रमर उड़ता हुआ आ जाता है। गोपियाँ उसी को लक्ष्यकर उद्धव को कहीं प्रेम से, कहीं खीझ से, कहीं व्यंग्य से और कहीं उपालंभ से अपने हृदय के भावों को व्यक्त करती हैं। भ्रमरगीत का शाब्दिक अर्थ है- भ्रमर का गान या गुंजन।
- **भ्रमरगीत का उद्देश्य**-निर्गुण के ऊपर सगुण का मंडन और ज्ञान के ऊपर भक्ति की विजय दर्शाना।
- **सूरदास और उनका भ्रमरगीत**-भ्रमरगीत से संबंधित सूर की तीन रचनाएँ मिलती हैं-
  1. **प्रथम भ्रमरगीत**-यह श्रीमद्भागवत का अनुवाद है। दोहों, चौपाइयों तथा यत्र-तत्र सार छंद में रचित इस भ्रमरगीत में सरसता के अभाव के साथ-साथ सूर के ज्ञान और वैराग्य विषयक सिद्धांतों का विश्लेषण नहीं हुआ है।
  2. **द्वितीय भ्रमरगीत**-सूर के द्वितीय भ्रमरगीत में उद्धव का गोपियों के प्रति उपदेश, गोपियों का उपालंभ, उद्धव का मथुरागमन, गोपियों की वियोगावस्था को उद्धव से सुनकर कृष्ण की मूर्च्छा इत्यादि का वर्णन महज एक पद में हुआ है।
  3. **तृतीय भ्रमरगीत**-सूर का तृतीय भ्रमरगीत सबसे महत्त्वपूर्ण है। भ्रमरगीत सूरसागर का अंश है। सूर ने भ्रमरगीत की चर्चा सूरसागर के 4078 वें पद से लेकर 4710 वें पद तक की है। इस भ्रमरगीत में गोपियों का विरह-वर्णन, गोपियों का कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेमभाव, गोपियों का उद्धव, कृष्ण, कुब्जा के प्रति उपालंभ भाव के साथ-साथ निर्गुणोपासना के ऊपर सगुणोपासना की विजय तथा ज्ञान एवं योग पर प्रेम एवं भक्ति की विजय का दिग्दर्शन हुआ है।
- **आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा संपादित भ्रमरगीत**
  सूरसागर में 4936 पद हैं एवं कुल 12 स्कंध हैं। रामचंद्र शुक्ल ने सूरसागर से 400 गीतों का चयन कर 'भ्रमरगीत' शीर्षक से इसका संपादन व प्रकाशन कराया है।
- **भ्रमर के विभिन्न अर्थ**-डॉ. सत्येंद्र के अनुसार-'भ्रमर' के विभिन्न अर्थ इस प्रकार हैं-

1. भ्रमर-भौंरा
2. भ्रमर-कृष्ण
3. भ्रमर-उद्धव

Scanned with CamSc

4. भ्रमर-जहाँ तहाँ भ्रमण करनेवाला व्यभिचारी
5. भ्रमर-जिसे मति भ्रम हो गया हो
6. भ्रमर-जो दूसरों को भ्रम में डालना चाहता हो।
7. भ्रमर-जो पात्र अथवा नायक (लोककाव्य) में इत्यादि।

- साहित्य में 'भ्रमर' शब्द उपपति, रसलम्पट, छिछोरा, विश्वासघाती, मद्यप, छलिया, मर्यादामुक्त इत्यादि विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त हुआ है।
- सूर के 'भ्रमरगीत' के प्रसंग में जिस 'भ्रमर' का प्रयोग हुआ है, वह उपालंभ व आक्षेप के रूप में हुआ है। यही उपालंभ व आक्षेप भ्रमरगीत का प्राणतत्त्व है।

भ्रमरगीत-परंपरा

हिंदी-साहित्य में भ्रमरगीत की एक दीर्घ परंपरा मिलती है। **हिंदी में भ्रमरगीत की परंपरा सर्वप्रथम विद्यापति से मिलती है।** विद्यापति ने भ्रमरगीत-परंपरा का आगाज मात्र किया था, उसका विस्तार नहीं। उनके दो-तीन पद ही भ्रमरगीत-परंपरा के मिलते हैं (यथा-उद्धव कब हमनी ब्रज जाइब)। वस्तुतः, भ्रमरगीत की व्यवस्थित, विस्तृत व्यापक, सदृढ़ एवं सिद्धांतों पर आधारित सूर के **भ्रमरगीत से ही** वस्तुतः व्यवस्थित रूप से मिलता है। **भ्रमरगीत-परंपरा** के आरंभकर्त्ता कृष्णभक्ति शाखा के सिरमौर कवि सूरदास ही माने जाते हैं। डॉ. सत्येन्द्र ने 16वीं सदी से लेकर 20वीं सदी के मध्य तक भ्रमरगीत परंपरा की एक प्रामाणिक सूची 'ब्रजभाषा साहित्य के इतिहास' में इसप्रकार प्रस्तुत की है-

16वीं शती-	1535-भ्रमरगीत	सुरदास
	1553-भ्रमरगीत	कृष्णदास
	1560-भ्रमरगीत	सेव्यकवि
	1580-प्रेमतरंगिणी	लक्ष्मीनारायण
	1590-भँवरगीत	नंददास
17वीं शती-	1635-प्रेमरस सागर	घनश्याम
	1677-भ्रमरगीत	परमानन्ददास
18वीं शती-	1735-भ्रमरगीत	केशव (मेड़वा के)
	1751-भ्रमरगीत	कालिदास
	1777-पूर्व सनेह लीला	रसिकराम
	1788-वियोगवल्ली उपालम्भ शतक	रसरूप
	1789-सनेह सागर	बक्सी हंसराज
	1790-प्रेमदीपिका	अक्षर अनन्य

Scanned with CamSc

	1795-रसिक पचीसी	रसिकराम
	1795-स्नेह लाल	हरिराम जी 'रसिक'
19वीं शती-	1803-भ्रमरगीत	रसनायक
	भ्रमरगीत	वृन्दावनदास
	1806-भ्रमरगीत	प्रागनकवि
	1809-ब्रजविलास	ब्रजवासीदास
	1815-गोपी प्रेमपियूष प्रवाह	नवनीत चतुर्वेदी
	1835-बिरह बत्तीसी	मथुरालाल
	1839-प्रेम पचीसी	शिवराम
	1946-निर्गुण सगुण निरूपण	शिवानंद
	1870-उक्तजुक्त रसकौमुदी	निजकवि
	1879-भँवरगीत	सेवाराम
	1879-गोपी तथा कुब्जा पचीसी	ग्वाल कवि
	1880-रसिक पचीसी	रसरासि
20वीं शती-	1911-भागवत भ्रमरगीत अनुवाद	रघुराजसिंह
	1929-उद्धवशतक	रत्नाकर
	1941-भ्रमरदूत	सत्यनारायण 'कविरत्न'
	1970-उद्धव शतक	डॉ. रसाल
	1981-उद्धव शतक	गजेन्द्र चतुर्वेदी

- **बच्चन सिंह ने भ्रमरगीत के विषय में लिखा है-**
- सूर का भ्रमरगीत वियोग श्रृंगार का सर्वोच्च शिखर है। विरह की इतनी वैविध्यपूर्ण मानसिक दशाएँ शायद ही कहीं मिलें। पूरा भ्रमरगीत वक्रोक्तियों से भरा पड़ा है।
- भ्रमरगीत में उद्धव और भ्रमर को बार-बार संबोधित किया गया है। जहाँ उद्धव संबोधित हैं वहाँ गोपियाँ उद्धव से सीधे शास्त्रास्त्र करती हैं। जहाँ भ्रमर को संबोधित किया गया है वहाँ पर व्यंग्योक्तियाँ की बाणवर्षा देखने ही लायक है। संख्या में वक्रोक्तियाँ अधिक हैं।
- भ्रमरगीत के बहाने निर्गुणोपासना की धज्जियाँ उड़ाने में सूर ने कोई कसर नहीं उठा रखी है।
- भ्रमरगीत का आंरभ ही निर्गुण विरोध से होता है-'आयो घोष बड़ो व्योपारी'।

Scanned with CamSc